

प्रेस विज्ञप्ति

## जामिया के भूगोल विभाग में विकसित भारत अभियान के तहत "पर्यावरण, विकास और संसाधन" पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के भूगोल विभाग ने भारत सरकार की विकसित भारत पहल के तहत 26 फरवरी, 2024 को क्षेत्रीय विकास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के प्रोफेसर मोहम्मद हाशिम कुरेशी (सेवानिवृत्त) द्वारा "पर्यावरण, विकास और संसाधन" पर एक विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया। इस कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथियों, प्रतिष्ठित संकाय सदस्यों, अनुसंधान विद्वानों और छात्रों ने भाग लिया।

भूगोल विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर हारून सज्जाद ने अतिथि वक्ता, संकाय सदस्यों और सभी छात्रों का स्वागत किया। सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर लुबना सिद्दीकी समन्वयक, एनसीसी, जेएमआई ने की।

प्रोफेसर एम.एच. कुरेशी ने पर्यावरण की अवधारणा और घटकों को पेश करने के साथ शुरुआत की। अपना व्याख्यान देते हुए उन्होंने विकास और वृद्धि के मापदंडों पर जोर दिया। उन्होंने बताया कि विकास एकतरफ़ा होता है जिसका सकारात्मक अर्थ होता है जबकि विकास प्रकृति में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों होता है। उन्होंने रूढ़िवादी से उत्पादक अर्थव्यवस्था की ओर बदलाव पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर कुरेशी ने बताया कि हमारा शरीर हमारे आस-पास के वातावरण को कितनी आश्चर्यजनक रूप से प्रतिबिंबित करता है, क्योंकि हम मिट्टी से बने हैं, हमारे शरीर की संरचना 70% पानी है, हमारे पेट में पाचन के लिए अग्नि है, हम हवा में सांस लेते हैं और हमारे पास आत्मा है, उन्होंने प्रौद्योगिकी के स्तर और आर्थिक विकास में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

आगे विस्तार से, प्रौद्योगिकी को निम्न स्तर की प्रौद्योगिकी में विभाजित किया गया, जिसका अर्थ है कि यह सभी के लिए सुलभ है, जैसे- कुदाल, साइकिल और खोदा हुआ कुआँ। अगला स्तर मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी है, जिसमें ट्यूबवेल, कार और ट्रैक्टर शामिल हैं। इसके बाद अत्यधिक परिष्कृत प्रौद्योगिकी आती है, जो समाज के केवल एक छोटे वर्ग द्वारा वहन की जा सकती है, जिसमें सड़क मार्ग, रेलवे, यानी संसाधनों पर सामाजिक नियंत्रण शामिल है। प्रोफेसर कुरेशी ने जोर देकर कहा कि सतत विकास लक्ष्य किसी निश्चित सामंजस्य की स्थिति में नहीं हैं, बल्कि परिवर्तन की प्रक्रिया में हैं। अपनी प्रेरक बातचीत का समापन करते हुए प्रो. कुरेशी ने सभा को कुछ अनसुलझे प्रश्नों पर विचार करते हुए छोड़ दिया, जैसे: क्या हम भावी पीढ़ियों की जरूरतों और चाहतों को जानते हैं? क्या विश्व सांस्कृतिक रूप से अनाकार है? क्या खाने की टोकरी दुनिया भर में एक जैसी है? व्याख्यान के अंत में उन्होंने अपने जीवन के अमूल्य अनुभव साझा किए।

प्रो. लुबना सिद्दीकी ने अपनी अध्यक्षीय टिप्पणी दी। व्याख्यान के बाद एक संवादात्मक चर्चा हुई जिसमें प्रोफेसर एम.एच. कुरैशी ने विभाग के पीएच.डी. शोधार्थियों और छात्रों से बातचीत की। इस ज्ञानवर्धक कार्यक्रम में प्रोफेसर मोहम्मद इश्तियाक, (सेवानिवृत्त) प्रो. अतीकुर रहमान, (चीफ प्रॉक्टर, जामिया मिलिया इस्लामिया), प्रो. मसूद अहसन, प्रो. लुबना सिद्दीकी, (मानद समन्वयक, एनसीसी), प्रो. तरूणा बंसल, डॉ. मोहम्मद अफसर आलम, डॉ. हसन राजा नकवी, डॉ. अदनान शकील, डॉ. आसिफ अली एवं छात्र-छात्राएं शामिल थे। डॉ. गज़ल सलाहुद्दीन, प्रभारी - विस्तार व्याख्यान और वेबिनार ने कार्यक्रम का संचालन किया और डॉ. आसिफ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापित किया।

जनसंपर्क कार्यालय

जामिया मिल्लिया इस्लामिया